20 यशस्विनी

मत उसके नभ को छीनो तुम,
मत तोड़ो उसके सपनों को।
वह दान दया की वस्तु नहीं,
वह जीव नहीं वह नारी है।

अगर कर सकते हो कुछ भी तुम,
तो कुछ न करो– यह कार्य करो।
जो चला गया– पर अब जो है,
उसको संवारना आर्य करो।

क्या दादी–नानी–चाची–माँ।
बस यह बनकर है रहने को?
निर्जीव नहीं, वह नारी है
उसे टेरेसा बन जीने दो,
उसे इंदिरा बन जीने दो।

हाँ तोड़ो उस बेड़ी को जरा
जिसमें नफरत की कड़ियाँ हैं
फिर पंखों को खुल जाने दो
उसे कल्पना बन जीने दो,
उसे लता बन जीने दो

पग–नुपूर कंगन–हार नहीं
तुम विद्या से शृंगार करो
तुम खुद अपना सम्मान करो
अपना नारीत्व स्वीकार करो।

–बेबी रानी

शब्दार्थ

आर्य- श्रेष्ठ **बेड़ी**-जंजीर **पग**-पैर **नुपूर**- पायल

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इन पद्यांशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए

(क) पग-नुपूर कंगन हार नहीं
तुम विद्या से शृंगार करो

(ख) वह दान दया की वस्तु नहीं,
वह जीव नहीं वह नारी है।

(ग) उसे टेरेसा बन जीने दो,
उसे इंदिरा बन जीने दो।

पाठ से आगे

1. समाज में स्त्री एवं पुरुष में भेद- भाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है।
2. समाज में स्त्री-पुरुष के बीच किया जाने वाला भेद-भाव मिटाना क्यों जरूरी है ? इसको मिटाने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?
3. समाज में भ्रूण हत्याएँ हो रही हैं। लगातार महिलाओं की संख्या में कमी हो रही है। लोग लड़के की कामना करते हैं तथा लड़कियों को दोयम दर्जे के नागरिक के रूप में देखा जाता है। वर्तमान समय में कमोवेश नारी की यही स्थिति है। इस परिदृश्य को ध्यान में रखकर एक स्वरचित कविता का निर्माण कीजिए।

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

तोड़ो	संवारना
नफ़रत	सम्मान
स्वीकार	दया

2. दिये गये पुंल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द लिखिए:-

अभिनेता	नेता
लेखक	छात्र
अध्यापक	नर

गतिविधि

1. बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, भ्रूण-हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियाँ हमारे समाज में हैं। आपके विद्यालय में 'मीना-मंच' से संबंधित या कुछ अन्य पुस्तकें होंगी जिनमें बालिका शिक्षा तथा नारी सशक्तीकरण से संबंधित कहानियाँ हैं। आप उनका अध्ययन कीजिए और नुक्कड़ नाटक के द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए लोगों को प्रेरित कीजिए।

2. प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिन क्या-क्या होता है? अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए।

3. भारतीय नारी ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना परचम लहराया है, जैसे-

इन्दिरा गाँधी	-	राजनीति
कल्पना चावला	-	अंतरिक्ष
मदर टेरेसा	-	समाज-सेवा
लता मंगेशकर	-	संगीत

क्या आपके आस-पास कोई ऐसी नारी है, जिसने किसी क्षेत्र में अपना विशेष नाम किया हो। शिक्षक, अभिभावक की सहायता से पता कर उनसे मिलिए और बातचीत कीजिए।

गतिविधि

जूतों की दुकान में जाकर जूते-चप्पलों तथा सैंड्लों की बनावट, रंग तथा उपयोग में लाई गई सामग्री पर जानकारी एकत्रित करके नीचे दिए गए प्रश्नों के जबाव दीजिए-

(क) क्या लड़के तथा लड़कियों के जूते-चप्पल तथा सैंड्लों में अन्तर है? यदि हाँ, तो ये अन्तर कौन-कौन से हैं?

(ख) लड़के तथा लड़कियों के लिए अलग-अलग जूते-चप्पल बनाने के क्या कारण हो सकते हैं?

(ग) लड़के तथा लड़कियों के जूते-चप्पलों तथा सैंड्लों में अन्तर लिंग-भेद को बनाए रखने का एक तरीका है। चर्चा कीजिए।

शारीरिक ताकत का भ्रम

स्त्रियाँ तेजी से दौड़ नहीं सकतीं- यह धारणा 'सुसंस्कृत' गृहिणियों' को देख कर पैदा होती है। लेकिन तथ्य गवाह है कि यदि स्त्री को समान अवसर मिले तो वह पुरुषों से ज्यादा पीछे नहीं रह सकतीं। ओलंपिक के रिकार्ड इसके गवाह हैं। ओलंपिक प्रतियोगिताओं में 100 मीटर की दौड़ में पुरुषों का रेकार्ड 9.83 सेंकेड (1984 में) का है और स्त्रियों का रेकार्ड 10.76 सेकेंड (1984 में) का। यानि स्त्री की अधिकतम रफ्तार पुरुष की अधिकतम रफ्तार से सिर्फ 17.94 प्रतिशत कम है। लेकिन 10 हजार मीटर की दौड़ में यह फर्क लगभग आधा हो जाता है। 10 हजार मीटर की दौड़ में पुरुषों का अब तक का रेकार्ड है 27 मिनट 18.81 सेकेंड और स्त्रियों का 30 मिनट 13.74 सेकेंड। यानी स्त्री की अधिकतम रफ्तार पुरुष से सिर्फ 9.95 प्रतिशत कम है। क्या 9.95 प्रतिशत की कमी स्त्री और पुरुष की दौड़ने की क्षमता में किसी बड़े, मूलभूत फर्क की ओर इशारा करती है? फिर यह सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय रेकॉर्ड का मामला है। औसत के स्तर पर यह फर्क और भी कम हो सकता है। बल्कि कम हो जाता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि स्त्रियों की रफ्तार स्थिर नहीं है। यह पिछले पाँच दशकों में लगातार बढ़ती गयी है। उदाहरण के लिए 100 मीटर की दूरी स्त्री द्वारा तय करने का रेकार्ड 1928 में 12.2 सेकेंड था, जो 1984 में घट कर 10.97 सेकेंड रह गया। 800 मीटर की दूरी में यह फर्क इस प्रकार रहा: 1928 में 4 मिनट 16.8 सेकेंड और 1984 में 1 मिनट 57.60 सेकेंड। इससे क्या हम यह अनुमान नहीं लगा सकते कि आदिम युग में, जब विषमता नहीं थी या न्यूनतम थी तथा स्त्री को बलपूर्वक सुकुमार नहीं किया जाता था, तब यह भी पुरुष की तरह ही हृष्ट-पुष्ट होती होगी-उतनी ही सक्षम, उतनी ही चुस्त और शायद उतनी ही हिंसक भी?

(राजकिशोर स्त्री-पुरुष: कुछ पुनर्विचार से साभार)